RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-03
March-2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[UGC Listed Journal]

गृह प्रबन्ध एवं पारिवारिक बजट : एक अध्ययन

डॉ. राजकुमार सिंह बोलिया

सह–आचार्य, समाजशास्त्र, मा.ला.व.रा. महाविद्यालय, भीलवाड़ा (राज.)

प्रस्तावना :

समाज को सुचारू रूप से चलायमान रखने एवं संगठित रखने में परिवार की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। अगर परिवार संगठित ओर आदर्श होगें तो समाज भी यकीनन विकसित और संगठित होगा। परिवारों को आदर्श एवं विकसित और सुदृढ बनाने के लिये पारिवारिक व्यवस्था ओर उसमें भी गृहप्रबन्ध एवं उसके पारिवारिक बजट का योगदान, उसकी भूमिका अहम् हो जाती है। इसलिये कहा भी जाता है कि परिवार का सुख गृह प्रबन्ध पर आधारित होता है, परिवार का सुख व समृद्धि उत्तम गृहणी व उसके द्वारा किये गए गृह प्रबन्ध पर ही आधारित होती है, देश एवं राष्ट्र या समाज की सफलता के लिये उत्तम गृह प्रबन्ध का प्रशिक्षण भी उतना ही आवश्यक है जितने दूसरे प्रकार के प्रबन्धों का होता है। परिवार की आय एवं व्यय का लेखा जोखा भी एक उत्तम गृह प्रबन्ध का मूल तत्व माना जाता है।

फाल्सम के अनुसार ''प्रजातंत्र का भविष्य जनसंख्या की पुनः स्थापना एवं उसकी समृद्धि पर आधारित होता है, निर्भर करता है। यह समृद्धि एवं सुख बच्चों के प्रारंभिक व्यक्तित्व के विकास पर निर्भर होता है जो माता–पिता एवं संतानो के बीच अच्छे सम्बन्धों का परिणाम होता है। इन अच्छे सम्बन्धों के लिये माता–पिता का वैवाहिक जीवन सुखी होना चाहिए। घर की उचित व्यवस्था वैवाहिक जीवन को सुखी बना सकती है।

लारेंस फ्रेंक ने भी लिखा है कि यदि हम चाहते हैं कि नई पीढ़ी का वैवाहिक जीवन सुखी रहे एवं आने वाले बच्चों का व्यक्तिव विकसित हो तो हमें भावी दम्पतियों को गृहस्थी की उचित व्यवस्था करने की शिक्षा देनी चाहिए उनको सटीक एवं ठोस मार्गदर्शन देना चाहिए।

अर्थ :–

गृह प्रबन्ध वह प्रक्रिया है जिसमें घर में उपलब्ध भौतिक एवं मानवीय संसाधनों का ऐसा उपयोग हो कि जिससे हमारे पारिवारिक जीवन के लक्ष्यों की अधिकतम प्राप्ति की जा सके । ग्रास एवं केन्डल के अनुसार–''ग्रह प्रबन्ध निर्णयों की ऐसी श्रृंखला है जो पारिवारिक लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए पारिवारिक साधनों के प्रयोग की प्रक्रिया का निर्माण करती है । इस प्रक्रिया में तीन निरंतर चलने वाले तत्व हैं– नियोजन, नियोजन को क्रियान्वित करने वाले विभिन्न तत्वों का नियंत्रण, इन कार्यों के परिणामों का मूल्यांकन'' स्पष्ट होता है कि नियोजन एक मानसिक प्रक्रिया तो है ही साथ ही नियोजन, नियन्त्रण एवं मूल्यांकन ये भी एक के बाद एक चलने वाले तीन चरण होते हैं जो ग्रह प्रबन्ध के मूलतत्व कहे जा सकते हैं।

नियोजन से तात्पर्य है कि किए जाने वाले कार्यों का पहले से ही चित्रीकरण किया जा सके ताकि तत्कालीन एवं दीर्घकालीन पारिवारिक लक्ष्यों की प्राप्ति सुगमता एवं सफलता पूर्वक की जा सके। उत्तम ग्रह प्रबन्ध में लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए कार्यों की रूपरेखा पहले से ही नियोजित कर ली जाती है।

''नियन्त्रण से तात्पर्य होता है कि क्रियाशील बनाने के लिए व्यक्तिगत एवं संयुक्त प्रयास।'' इसमें स्वंय को व अन्यों को निर्देशित एवं नियंत्रित करने की प्रक्रिया निहित होती है। एक उत्तम ग्रह प्रबन्धक अपनी विचार शक्ति से स्वयं भी निर्देशित होता है व दूसरों को भी उचित मार्गदर्शन देता है।

''मूल्यांकन से तात्पर्य है जो कुछ भी किया गया है उसका एवं उसके परिणामों पर पारिवारिक लक्ष्यों की प्राप्ति में विचार विमर्श।'' यह सोच विचार और विमर्श या कार्यों का मूल्यांकन ही भविष्य के नियोजन का आधार बन जाता है। यानि पूर्व में जो गलतियाँ हुयी थी उनका पुनःपरीक्षण करके भविष्य में उस गलती का दोहराव न हो, ऐसे प्रयास इन मूल्यांकन के ठोस आधार पर किये जा सकते हैं।

ग्रास एवं केन्डल के गृह प्रबन्ध को निम्न चित्र द्वारा आसानी से समझा जा सकता है –

RRIJM 2015, All Rights Reserved

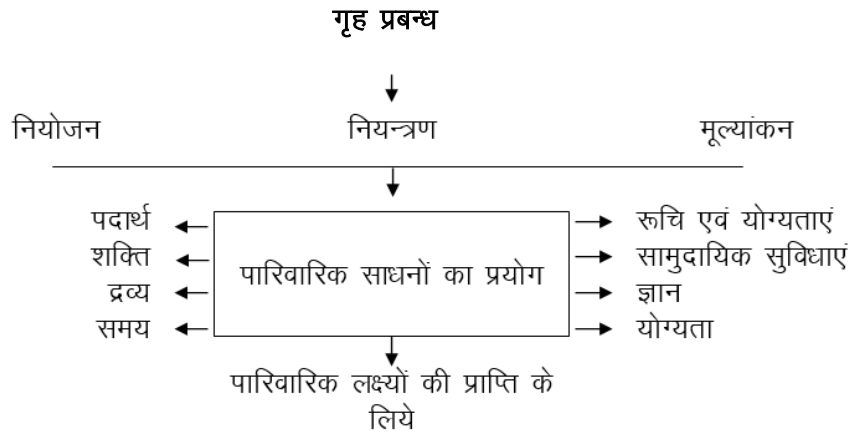

गृह प्रबन्ध के उद्देश्य :

- परिवार के सदस्यों का सर्वांगीण विकास ।
- परिवार के सदस्यों के सुख व समृद्धि में वृद्धि ।
- परिवार के सदस्यों में पारिवारिक प्रेम व सद्भाव का विकास ।
- परिवार के सदस्यों की कार्यक्षमता में वृद्वि ।
- परिवार के सदस्यों की आर्थिक उन्नति ।
- पारिवारिक कार्यो की समुचित व्यवस्था ।
- आधुनिक विचारों एवं प्राचीन संस्कारों में सामंजस्य स्थापित करना ।
- नयी एवं पुरानी पीढ़ियों के बीच सेतु निर्माण ।

गृह प्रबन्ध के मूलतत्व :

- उत्तम मकान, जिसमें मकान की स्थिति, पास पड़ोस, आकार, पहुंच, बनावट एवं उचित सुविधाएं मौजूद होनी चाहिए।
- उत्तम रसोईघर, जिसमें पर्याप्त आकार, चूल्हा एवं ईंधन, भोजन सामग्री, अैर सफाई की समुचित व्यवस्था हो ।
- सुरूचिपूर्ण सजावट
- घर की पर्याप्त साफ सफाई
- पारिवारिक बजट
- पारिवारिक बचत

आदि का ध्यान रखा जाना चाहिए ।

पारिवारिक बजट :

यह गृह प्रबन्ध का सबसे महत्वपूर्ण मूलतत्व होता है आधार होता है। इस पर ही अन्य तत्व आश्रित एवं निर्भर रहते है। यह आय व्यय का लेखा जोखा होता है। किसी समय विशेष में आय व्यय के विस्तृत ब्योरे को बजट कहते हैं। पारिवारिक बजट का निर्माण करना इसलिये भी आवश्यक माना जाता हे ताकि एक व्यक्ति अपने खर्चो, व्ययों को अपनी आय के अनुकूल ही व्यवस्थित ढंग से समायोजित कर सके। पारिवारिक बजट को देखकर ही किसी भी परिवार के जीवन स्तर (STANDARD OF LIVING) का पता भी लगाया जा सकता है। बजट का प्रभाव पारिवारिक एवं सामाजिक सम्बन्धों पर भी होता है।

बेबर ने पारिवारिक बजट को परिभाषित करते हुए लिखा है कि ''पारिवारिक बजट पारिवारिक आय को व्यवस्थित रूप से ऐसी बातों के लिये व्यय करने का तरीका है जिसमें कि अधिकतम सदस्यों के सुख व कल्याण में वृद्वि हो सके। पारिवारिक बजट असावधानीपूर्वक अव्यवस्थित रूप से खर्च करने के तरीके के स्थान पर योजनाबद्व विवेकपूर्ण व्यय को प्रतिस्थापित करने का तरीका है।''

सैट के अनुसार पारिवारिक बजट संतुलित व्यय के प्रतिमान के प्रावधान के द्वारा विवेकपूर्ण व्यय की मार्गदर्शिका है। इसका तात्पर्य व्यय की एक विस्तृत लिखित योजना। इसे स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है कि प्रत्येक परिवार को अपना बजट अपनी आय के अनुरूप ही बनाना चाहिए । यहां पर **''जितनी चादर हो उतने ही पांव पसारिये''** वाली कहावत भी लागू होती हैं।

पारिवारिक बजट के मूल तत्वों में हम पाते हैं कि –

- परिवार की कुल मासिक आय कितनी है ?
- परिवार की आवश्यकताओं पर होने वाला कुल व्यय कितना होता है? और
- भविष्य के लिये बचत–विशेषकर बच्चों के लियें कितनी की जा रही है?

RRIJM 2015, All Rights Reserved

इन्हीं पर पारिवारिक बजट की सफलता ओर असफलता केन्द्रित होती है। पारिवारिक बजट का महत्व बढ़ती महंगाई के साथ–साथ महत्वपूर्ण होता जा रहा है। पारिवारिक बजट से कई प्रकार के लाभ भी होते हैं जिनमें बजट से फिजूल खर्चो पर रोक लगती है, विवेकपूर्ण तरीके से व्यय होता है, अनियोजित व्यय से बचाव होता है, आय व्यय का व्यवस्थित हिसाब रखा जा सकता हे, 'अनिवार्य आवश्यकताओं की पूर्ति की योजना बनाने में सहायक होता है, जीवन स्तर की वृद्धि में सहायक होता है, परिवार की अधिकतम संतुष्टि की प्राप्ति में सहायक होता है, हानिकारक एवं मादक द्रव्यों के उपयोग पर प्रतिबन्ध लगाने में सहायक, और सबसे महत्वपूर्ण बचत को प्रोत्साहित करता है।

निष्कर्ष :

पारिवारिक बजट अपेक्षाकृत एक नया अध्ययन का विषय है । अनेक देशों में विशेषकर विकसित देशों में महिलाएं पारिवारिक बजट बनाने में अपना सहयोग प्रदान करती हैं और भारत में भी महिलाएं परिवारों के बजट बनाने में अपना सहयोग कम ही सही परन्तु पारिवारिक स्थिति को सुचारू रूप से बनाए रखने में अपना सर्वस्व योगदान प्रदान करती है। पारिवारिक बजट बनाने से सभी प्रकार की आवश्यकताओं की पूर्ति हम संतुलित तरीके से कर पायेगें।

हमें पूरे समाज को पारिवारिक बजट बनाने का प्रशिक्षण देना होगा तभी जनता, समाज को मितव्ययी बना सकेगें, बचत को प्रोत्साहित कर सकेगें और जन सामान्य का जीवन स्तर ऊँचा उठा सकेगें ।

संदर्भ सूची –

1. Joseph Kirk Folsam - The Family and Democratic Society Routledge - 1998
2. Gross And Crandall Management for Modern Families, Sterling Publishing Private Limited, Delhi - 1963
3. Baber R.E., Marriage and Family, McGraw Hill Publications - 1939
4. Sait U.B., New Horizones for the Family. The Macmillan Company - 1946
5. B. Russell, Marriage and Morals, Liverright Paperbound Routledge - 1970
6. Hannah Stone & Araham Stone - 'A Marriage Manual', Master Mind Books - 1952

RRIJM 2015, All Rights Reserved